अनिल सक्सेना

सेहत और पर्यावरण दोनों के लिए खतरनाक है पॉलिथीन

पॉलिथीन और प्लास्टिक गांव से लेकर शहर तक लोगों की सेहत बिगाड़ रहे हैं। शहर का ड्रेनेज सिस्टम अक्सर पॉलिथीन से भरा मिलता है। इसके चलते नालियां और नाले जाम हो जाते हैं। इसका प्रयोग तेजी से बढ़ा है। प्लास्टिक के गिलासों में चाय या फिर गर्म दूध का सेवन करने से उसका केमिकल लोगों के पेट में चला जाता है। इससे डायरिया के साथ ही अन्य गंभीर बीमारियां होती हैं ऐसे में प्लास्टिक के गिलासों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। रही बात पॉलिथीन के प्रयोग की तो वह भी खतरनाक है।

पॉलिथीन

पूरे देश की एक गंभीर समस्या है। पहले हम-आप जब खरीदारी के लिए झोला लेकर जाते थे, तब दुकानदार के पास कागज के लिफाफे या अखबार के टुकड़े होते थे जिनमें वह सामान डाल देता था। लेकिन अब हम पॉलिथीन मांगते हैं। घर जाकर यह पॉलिथीन चली जाती है कूड़ेदान में, पॉलिथीन मवेशी के पेट में जमा होने लगती है और इससे वे कुछ ही दिनों में मर जाते हैं। मंदिरों, ऐतिहासिक धरोहरों, पार्क, अभ्यारण्य, रैलियों, जुलूसों, शोभा यात्राओं आदि में धड़ल्ले से इसका उपयोग हो रहा है। शहरों की सुंदरता पर इससे ग्रहण लग रहा है। पॉलिथीन न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य को भी नष्ट करने पर आमादा है। पॉलिथीन का उपयोग मनुष्य की आदत में शुमार हो गया है। लगातार इस्तेमाल के कारण आज हर व्यक्ति इसी पर निर्भर दिखाई दे रहा है।

स्मरण रहे कि पृथ्वीतल पर जमा पॉलिथीन जमीन का जल सोखने की क्षमता खत्म कर रही है। इससे भूजल स्तर गिर रहा है। सुविधा के लिए बनाई गई पॉलिथीन आज सबसे बड़ा असुविधा का कारण बन गई है। प्राकृतिक तरीके से नष्ट न होने के कारण यह धरती की उर्वरक क्षमता को भी धीरे-धीरे समाप्त करने पर तुली है। पॉलिथीन से निकलने वाला धुआं ओजोन परत के साथ लोगों को भी नुकसान पहुंचा रहा है। इसको जलाने से कार्बन डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड एवं डाईऑक्सींस जैसी विषैली गैस निकल रही हैं। लोग इस बात को लेकर भी चिंतित हैं कि विकास के नाम पर शहरों में पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हुई है। तरह-तरह के निर्माण के दौरान भी कई पेड़ काटे गए। रोड चौड़ीकरण के दौरान भी सैकड़ों पेड़ कुर्बान हो गए। पर उतने या उससे ज्यादा पेड़ वापस नहीं लगाए गए। प्लास्टिक का प्रयोग हमारे जीवन में सर्वाधिक होने लगा है इसका प्रयोग नुकसानदायक है यह जानते हुए भी हम धड़ल्ले से इनका इस्तेमाल कर रहे हैं। यदि इसके प्रयोग पर रोक लगे तो बात बने। जो भी व्यक्ति प्लास्टिक का प्रयोग सर्वाधिक करता है वह अपने जीवन से खेलने का काम करता है। इतना ही नहीं वह पर्यावरण को प्रदूषित भी करता है। प्लास्टिक को जलाने से भी नुकसान होगा। इसका जहरीला धुआं स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। पॉलीथिन की पन्नियों में लोग कूड़ा भरकर फेंकते हैं। कूड़े के ढेर में खाद्यय पदार्थ खोजते हुए पशु पन्नी निगल जाते हैं। ऐसे में पन्नी उनके पेट में चली जाती है। बाद में ये पशु बीमार होकर दम तोड़ देते हैं। प्लास्टिक और पॉलिथीन का

प्लास्टिक के गिलास व थैलियों में गरम तरल पदार्थ सेहत के लिए हानिकारक है

प्रयोग रोकने के लिए हमें लोगों को जागरूक करना होगा। तभी लोगों को इसके दुष्प्रभाव से बचाया जा सकता है। लोगों को पॉलिथीन की पन्नियों की जगह सामान लाने और रखने में कपड़ें के थैले का प्रयोग करना होगा।

पॉलिथीन और प्लास्टिक गांव से लेकर शहर तक लोगों की सेहत बिगाड़ रहे हैं। शहर का ड्रेनेज सिस्टम अक्सर पॉलिथीन से भरा मिलता है। इसके चलते नालियां और नाले जाम हो जाते हैं। इसका प्रयोग तेजी से बढ़ा है। प्लास्टिक के गिलासों में चाय या फिर गर्म दूध का सेवन करने से उसका केमिकल लोगों के पेट में चला जाता है। इससे डायरिया के साथ ही अन्य गंभीर बीमारियां होती हैं ऐसे में प्लास्टिक के गिलासों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। रही बात पॉलिथीन के प्रयोग की तो वह भी खतरनाक है।

प्लास्टिक और पॉलिथीन का प्रयोग पर्यावरण और मानव की सेहत दोनों के लिए खतरनाक है। कभी न नष्ट होने वाली पॉलिथीन भूतल जल स्तर को प्रभावित कर रही है। देखा जा रहा है कि कुछ लोग अपनी दुकानों पर चाय प्लास्टिक की पन्नियों में मंगा रहे हैं। गर्म चाय पन्नी में डालने से पन्नी का केमिकल चाय में चला जाता है। जो बाद में लोगों के शरीर में प्रवेश कर जाता है। चिकित्सकों ने प्लास्टिक के गिलासों और पॉलिथीन में गरम पेय पदार्थों का सेवन न करने की सलाह दी है।

याद रहे कि कई जगह पॉलिथीन पर प्रतिबंध है, बावजूद इसके दुकानदार चोरी-छिपे पॉलिथीन का प्रयोग करते पाए जाते हैं ऐसे में सवाल उठता है कि क्यों नहीं सफल होता है पॉलिथीन पर प्रतिबंध पर्यावरण एवं स्वास्थ्य दोनों के लिए नुकसानदायक 40 माइक्रॉन से कम पतली पॉलिथीन पर्यावरण की दृष्टि से बेहद नुकसानदायक होती है। चूंकि ये पॉलिथीन उपयोग में काफी सस्ती पड़ती हैं, इसलिए इनका उपयोग धड़ल्ले से किया जाता है। लेकिन इन्हें एक बार उपयोग करने के बाद कूड़े में फेंक दिया जाता है, जो प्रदूषण का कारण बनती हैं। इसके साथ ही साथ कुछ कंपनियां ज्यादा लाभ के चक्कर में प्लास्टिक को लचीला और टिकाऊ बनाने के लिए घटिया एडिटिव (योगात्मक पदार्थ) मिलाती हैं, जो प्लास्टिक में रखे खाद्य पदार्थों के संपर्क में आकर घुलने भी लगते हैं। इससे प्रदूषण के साथ-साथ ये पन्नियां तरह-तरह की बीमारियों का भी सबब बनती हैं।

अगर सरकारें चाहें तो प्लास्टिक कचरे को अनेक क्षेत्रों में इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप हम बंगलुरू को ले सकते हैं, जहां पर कूड़े कचरे में फेंकी जाने वाली पन्नियों अन्य कचरें के साथ ट्रीटमेंट करके खाद बनाई जा रही है। इसी तरह हम हिमाचल प्रदेश का भी उदाहरण हमारे सामने है, जहां केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मदद से पन्नियों को चक्रित करके सड़क निर्माण में उपयोग में लाया जा रहा है। जर्मनी में प्लास्टिक के कचरे से बिजली का निर्माण भी किया जा रहा है। इसके अलावा पन्नियों को चक्रित करके खाद भी बनायी जा सकती है। इसलिए यदि सरकारें इस दिशा में गम्भीर हों, तो नुकसानदायक प्लास्टिक के कचरे से लाभ भी कमाया जा सकता है। ऐसे प्रयोगों को व्यापक बनाया जा सकता है।

पन्नियों को चक्रित कर सड़क निर्माण के उपयोग में लाया जा रहा है

तन को जला डालने वाली दाहक गर्मी भीषण ठण्ड, नवम्बर दिसंबर में भी चलते पंखे वो भी उत्तर भारत में, अतिवृष्टि, बाढ़ों का प्रकोप, पूर्णतया सूखा, आग उगलती धरती! कभी-कभी तो लगता है जो हमने भूगोल पढ़ते समय प्रकृति की देन मनोहारी ऋतुओं, कलकल करती नदियों, हिमाच्छादित पहाड़ों, हरित वन्य प्रदेशों के विषय में पढ़ा था वो आज पूर्णतया परिवर्तित रूप में हमारे समक्ष है। प्रकृति का चक्र गड़बड़ा गया है ? आज वैज्ञानिक, मौसम विज्ञानी सब चकित हैं, नित नवीन आकलन होते हैं, परन्तु प्रत्यक्ष रूप में परिणाम कुछ दूसरे ही रूप में दृष्टिगोचर होता है यदि नई पीढ़ी को ये कहा जाये कि अभी कुछ ही समय पूर्व की बात है, कि मसूरी नैनीताल तथा शिमला आदि पर्वतीय पर्यटन स्थलों पर पंखे, कूलर होते ही नहीं थे, तो क्या वो विश्वास कर सकेंगे। विश्व में किसी स्थल पर सुनामी भूकंप, कभी जंगलों में लगती आग का भयावह दृश्य, वन्य पशु-पक्षियों की लुप्त होती या घटती प्रजातियाँ, अनिष्ट की आशंकाएं जो आज पंडितों द्वारा नहीं अपितु आधुनिकतम विज्ञान वेत्ताओं द्वारा की जा रही हैं।

वर्षा कब और कितनी होगी गर्मी कितनी पड़ेगी, शीत कम रहेगा या

अधिक, कभी घाघ भड्डरी कवि अपने आकलनों से ही बता देते थे कब क्या बोना चाहिए, फसल काटने का सही समय आदि प्रकृति का रूप इतना सरल था कि स्वयं निरक्षर कृषक प्रकृति के रूप को पहचान कर अपना कर्म पूर्ण करता था और आज मौसम विभाग जहां पूर्ण शिक्षित व विषय विशेषज्ञ उपस्थित हैं, को अपनी गणनाओं तथा अनुमानों पर भरोसा नहीं हो पाता। मौसम विभाग घोषणा करता है अति वृष्टि का पता चला मानसून राह में ही अटक गया और वर्षा हुई नहीं गीष्म ऋतु में गर्मी न हो कर बाद में होती है अर्थात अनिश्चितता, इन सब

पॉलिथीन के कारण न केवल नदी-नाले अवरूद्ध हो रहे हैं
यह पशुधन के लिए भी प्राणघातक है

परिवर्तनों के लिए कोई और नहीं हम ही उत्तरदायी हैं।

पर्यावरणविद अध्ययन कर अनुसंधान के रूप में नित नूतन निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं, परन्तु कभी सत्य तो कभी मिथ्या उनके अनुमान, तथ्य निराशाजनक चित्र प्रस्तुत करते हैं। पर्यावरण अर्थात हमारे चहुं ओर का आवरण हमारे कृत्यों के कारण हमारे लिए विपदाजनक बन गया है। हमारी ओजोन परत जो हमारी रक्षक है स्वयं उस पर खतरा मंडरा रहा है।

पर्यावरण के सम्बन्ध में यूं तो चिंता विश्वव्यापी है परन्तु आज हम अपने देश के संदर्भ में विचार करें तो स्थिति बहुत अधिक विस्फोटक दिखाई देती है। कारण हमारी निरंतर बढ़ती जनसंख्या और सीमित साधन। आज हम दुनिया में जनसंख्या के दृष्टिकोण से बस चीन से पीछे है और अनुमान है कि 2050 तक हमारा देश विश्व में जनसंख्या के दृष्टिकोण से शीर्ष पर होगा। विश्व के क्षेत्रफल का मात्र 2.4% और विश्व की जनसंख्या का 16% संसाधनों के मामले में हम आज भी विकासशील हैं। इतनी विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूर्ण करना बहुत दुष्कर है। परिणामस्वरूप हमारे उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है। पेय जल का अभाव ऊर्जा की कमी कंक्रीट के जंगलों में परिणित होते हरे-भरे वन्य प्रदेश भोज्य पदार्थों की कमी तथा उपलब्ध साधनों का समान वितरण न हो पाने के कारण अव्यवस्थाएं बढ़ती जा रही हैं। हमारी कृषि भूमि बंजर बन रही है मिट्टी की उपजाऊ ऊपरी परत 12 अरब टन मिट्टी बह कर नष्ट हो रही है। मिट्टी का 60% भाग कटान, लवणता खनिज (हानिकारक) और जनसंख्या के अनुपात में पेयजल की उपलब्धता संकट में है। बढ़ते औद्योगिकरण के दुष्परिणाम भी आज प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग आदि के रूप में अपने जौहर दिखा रहे हैं। तूफान, चक्रवात, बाढ़ें सुनामी, भूकम्प आदि धन-जन का जो विनाश करते हैं वो सभी पर्यावरण के बिगड़ते संतुलन का परिणाम है।

जलवायु, मिट्टी सभी प्रदूषण की गिरफ्त में हैं। ध्वनि प्रदूषण के कारण हमारी श्रवण शक्ति प्रभावित हो रही है। श्वास लेने के लिए महानगरों में ऑक्सीजन चेम्बर्स की व्यवस्था विशिष्ठ प्रभावित लोगों के लिए व्यापार का माध्यम बन रही है। पीने के पानी के लिए मध्यम वर्ग तथा उच्च वर्ग घरों में जल शुद्धिकरण यंत्र का प्रबंध करने या मिनरल जल पीने को विवश है और निर्धन वर्ग वही प्रदूषित जल पी-पी कर घातक रोगों की चपेट में है। गर्मी व प्रदूषण, बढते वाहन अब कष्टदायक लगते हैं। आग उगलती चिमनियां श्वास लेना दूभर बना रही हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी पवित्र जीवन दायिनी मोक्षदायिनी गंगा, यमुना आज आचमन के व स्नान के योग्य नहीं रह गयी है। पर्यावरण के संतुलन के नियंताओं में प्रमुख "हरित वन" कंक्रीट के जंगलों में बदल रहे है। बहुमंजिला इमारतें शोपिंग मॉल्स उनका स्थान ले रहे हैं। पर्यावरण के लिए सर्वाधिक घातक पॉलिथीन को आज हमने अपने लिए अपरिहार्य बना लिया है। इस पॉलिथीन के कारण नदी नाले अवरूद्ध हो रहे हैं और यही पशुधन के लिए प्राणघातक सिद्ध हो रही है। जिस गौमाता को बचाने के लिए हम पुकार कर रहे हैं। उसका जीवन भी इसी पॉलिथीन के कारण संकटग्रस्त हो रहा है। धरती की उर्वराशक्ति को भी यही नष्ट कर रही हैं।

पतितपावनी नदियां सागर सभी को प्रदूषित हम कर रहे हैं। उद्योगों के कारण बड़े छोटे सभी उद्योगों का विषैला उच्छिष्ट, सीवर पम्प देह संस्कार

सरकारी प्रयासों के साथ स्वयं हमारी जागरूकता बहुत आवश्यक है, यदि हम चाहे तो पॉलिथीन के प्रयोग को स्वयं रोक सकते हैं। पेपर बैग या कपड़े की थैलियों को साथ रख कर इस समस्या से बचा जा सकता है। ठेले आदि पर बिकने वाले सामानों को पॉलिथीन में बेचने से रोककर में हम स्वयं योगदान दे सकते हैं। यदि हम पॉलिथीन बेग में सामान नहीं लेंगे तो विक्रेता उसका प्रयोग स्वयं ही बंद कर देगा।

के बाद शव भी यही बहाए जा रहे हैं। जल हमारा जीवन है। जिस धरती के बिना हमारा अस्तित्व नहीं है जो वायु हमारी प्राणदायिनी है उसका अनुचित दोहन विनाश का दृश्य तैयार कर रहा है और हम हैं कि सो रहे हैं विपदा अपने विनाशकारी स्वरूप में आती रही है तब जरा हमारी निन्द्रा भंग होती है और हम अपना दोष दूसरों पर डालकर स्वयं को निर्दोष मान लेते हैं। अब भी समय है आवश्यकता है हमारे स्वयं के चेतने की तथा सरकार के सजग होने की उचित नीति निर्माण की और उससे अधिक उन नीतियों के क्रियान्वयन के प्रयास किये गये हैं यथा दिल्ली में मेट्रों का चलाया जाना LPG वाहनों का संचालन आदि परन्तु भारत केवल दिल्ली में नहीं बसता और इतने कम प्रयास इतनी भीषण समस्या का समाधान के लिए ऊंट के मुख में जीरे के समान ही है। वनों को बचाने के लिए प्रयास सरकारी स्तर पर ही संभव है। नदियों में गिरने वाले दूषित पदार्थों को रोकने की व्यवस्था सरकार ही कर सकती है। विशिष्ठ कृषि उत्पादन पद्धतियों को अपनाकर उत्पादन की गुणवत्ता तथा मात्रा को बढ़ाया जाना जरूरी है। पॉलिथींस पर प्रतिबंध

सेहत और पर्यावरण दोनों...

प्लास्टिक थैलियों के स्थान पर जूट या कपड़े के थैलों का इस्तेमाल कर इस समस्या से बचा जा सकता है

प्रदूषित पर्यावरण का पेड़-पोधों एवं फसलों पर दुष्प्रभाव

विशाल जनसंख्या की विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करना बहुत दुष्कर हो रहा है

लगाया जाना अपरिहार्य बन चुका है।

सरकारी प्रयासों के साथ स्वयं हमारी जागरूकता बहुत आवश्यक है, यदि हम चाहे तो पॉलिथीन के प्रयोग को स्वयं रोक सकते हैं। पेपर बैग या कपड़े की थैलियों को साथ रख कर इस समस्या से बचा जा सकता है। ठेले आदि पर बिकने वाले सामानों को पॉलिथीन में बेचने से रोककर हम स्वयं योगदान दे सकते हैं। यदि हम पॉलिथीन बैग में सामान नहीं लेंगे तो विक्रेता उसका प्रयोग स्वयं ही बंद कर देगा।

नीति निर्धारण में हम पीछे नहीं बस आवश्यकता है उन नीतियों के क्रियान्वयन की। अतः आइये हम इस पर्यावरण दिवस पर हम सभी शपथ लें। पर्यावरण के संरक्षण की शपथ कागजी नहीं वास्तविक रूप में अपने स्तर पर पॉलिथीन के प्रयोग को बंद करने व करवाने की वृक्षों की देखभाल की तथा ध्वनि प्रदूषण से बचने की यदि यह निश्चय कर हम उसका पालन कर सकें तो स्वयं को तथा आगे आनेवाली पीढ़ियों को जीवन प्रदान करने में सक्षम होंगे।

कैसे कारगर हो सकते हैं प्रतिबंध

पर्यावरण की रक्षा के लिए प्लास्टिक पर लगाए जाने वाले प्रतिबंध तभी कारगर हो सकते हैं, जब उनके लिए कुछ इस तरह कदम उठाए जाए-

1. प्लास्टिक निर्माण करने वाली फैक्ट्रियों पर कड़ी नजर रखी जाए, जिससे वे मानक के विपरीत प्लास्टिक का निर्माण न कर सकें।

2. दुकानदारों को प्लास्टिक के विकल्प के रूप में जूट एवं कागज के बने थैले सस्ते दामों में और पर्याप्त मात्रा में नियमित रूप से उपलब्ध कराए जाएं।

3. जूट एवं कागज से बने थैलों के निर्माण के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया जाएं

4. प्लास्टिक के प्रयोग को निरूत्साहित करने के लिए स्कूल और कॉलेज स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएं।

5. मानक के विपरीत पॉलिथीन का उत्पादन/व्यापार करने वालों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई जाए। लगातार मॉनीटरिंग और कार्रवाई की जाये।

अब आप दुकान पर तो जाते ही होगें कुछ ना कुछ खरीदने तो बस प्लास्टिक के लिफाफे छोड़ें और रद्दी कागज के लिफाफे या कपड़े के थैले इस्तेमाल करें।

विश्व पर्यावरण दिवस से पहले पूरी दुनिया में पर्यावरण को बचाने पर बातें हो रही हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि आप पर्यावरण के लिए क्या कर सकते हैं? अब हम ऐसा क्या करे कि पर्यावरण के बुरे प्रभावों को दूर कर सके।

मनुष्य तथा अन्य वन जीवों को अपने जीवन के प्रति संकट का सामना करना पड़ रहा है। प्रदूषित पर्यावरण का प्रभाव पेड़ पौधे एवं फसलों पर पड़ा है। समय के अनुसार वर्षा न होने पर फसलों का चक्रीकरण भी प्रभावित हुआ है। प्रकृति के विपरीत जाने से वनस्पति एवं जमीन के भीतर के पानी पर भी इसका बुरा प्रभाव देखा जा रहा है। जमीन में पानी के स्रोत कम हो गए हैं। इस पृथ्वी पर कई प्रकार के अनोखे एवं विशेष नस्ल की तितली, वन्य जीव, पौधे गायब हो चुके हैं।

अब आप कहीं ये तो नहीं सोच रहे कि अगर है भी तो हम क्या कर सकते हैं। ऐसे दिवस तो आते ही रहते हैं। हम तो उस दिन बस भाषण बाजी सुन लेते हैं और समाचारों में लेख पढ़ लते हैं। हम अपना दायित्व ही नहीं समझ पा रहे। हमेशा की तरह दूसरों पर बात छोड़ देते हैं कि मैं तो कर ही रहा हूं या मैं तो सजग हूं पर दूसरे नहीं करते तो मैं क्या करूँ... मैं अकेला तो कुछ नहीं कर सकता ना... हालांकि अपवाद तो होते ही हैं। सच पूछें तो पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हमें कुछ ज्यादा करना भी नहीं है। सिर्फ एक पहल करनी है यानी खुद को एक मौका देना है। हमारी छोटी-छोटी समझदारी भरी पहल पर्यावरण को बेहद साफ-सुथरा और तरो-ताजा कर सकती है।

संपर्क करें:
अनिल सक्सेना
श्री राधा सदन, 273 अनुग्रहपुरी
गया-823 001, बिहार
मो.न. 09431272010
ईमेलः saxenaak273@yahoo.co.in